खण्ड - क

प्रश्न 1. गद्यांश :-

उत्तर :-

(i) पड़ोस का सामाजिक जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। यह हमारी सामाजिक सुरक्षा तथा जीवन की आनंदपूर्ण गतिविधियों को बढ़ावा देता है।

(ii) पड़ोसी के साथ सामंजस्य बिठाना हमारे लिए काफी महत्त्वपूर्ण है। अचानक उत्पन्न किसी आपदा के समय हमारे रिश्तेदारों व परिवारिक वालों की अपेक्षा पड़ोसी ही विश्वस्त सहायक बनकर उभरता है। साकस्मिक कार्यों में केवल पड़ोसी ही एक संबल बनते हैं। इस प्रकार पड़ोसी के साथ सामंजस्य बिठाना हमारे लिए बहुत हितैषी सिद्ध होता है।

(iii) उपर्युक्त पंक्तियों का गूढ़ार्थ इस प्रकार है :-
जो व्यक्ति अपने पड़ोसी से प्यार नहीं कर सकता, उससे सहानुभूति

नहीं रख सकता, उसके सुख-दुख में सम्मिलित नहीं हो सकता, वह अपने समाज अथवा देश के साथ भावनात्मक रूप में जुड़ने में सक्षम नहीं हो सकता। जो पड़ोस-कल्चर के कायदे-कानून नहीं निभा सकता, वह विशालतम देश के कायदे-कानून से समन्वय नहीं बिठा सकता।

पड़ोसी से खटपट के मुख्य कारण :-

i) आवश्यकता से अधिक पड़ोसी के पारिवारिक अथवा निजी जीवन में हस्तक्षेप के कारण।

ii) पड़ोसी से अत्यधिक अपेक्षाएँ करने के कारण।

पड़ोसी के साथ संबंधों में कड़वाहट न आने देने के लिए हमें बच्चों को नियंत्रण में रखना होगा। सामान्यतः बच्चों के झगड़े पारिवारिक झगड़ों का रूप ले लेते हैं। पड़ोसी के बच्चे पर हाथ उठाने की बजाय उसे प्यार से समझाना चाहिए। इससे एक अच्छे पड़ोस-कल्चर का निर्माण

किया जा सकता है।

(vi)

शीर्षक :- ~~पड़ोस~~ - ~~एक आवश्यकता~~
पड़ोसी - जीवन (पड़ोस-कल्चर)।

(vii)

* आनंदपूर्ण
समास-विग्रह :- आनंद से पूर्ण
समास :- तत्पुरुष समास।

(viii)

मुहावरा :-

* नमक-चीनी का लेन-देन :- जरूरत की छोटी-चीज़ का लेन-देन।
:- वा० प्र० :- अनिल व केशव के परिवार में नमक-चीनी का लेन-देन चलता है। वे काफी अच्छे पड़ोसी हैं।

प्रश्न 2. काव्यांश

(i) जन्मभूमि के विस्तार से कवि का आशय है कि जिस भूमि पर जन्म लेकर हम उसके बँटवारे की बात करते हैं उस भूमि का अब तक कितना विस्तार हो चुका है। भिन्न-भिन्न देश, राज्यों के नाम से हमारा संसार कितना विस्तृत हो चुका है।

(ii) देशों की भिन्नता को कतई महत्त्व नहीं दिया जा सकता। सारे देश एक धरती पर अवस्थित हैं तथा एक ही आसमान तले भी हैं। सम्पूर्ण धरा तथा अंबर तो एक ही है फिर उनमें देश-राज्य के नाम से कोई भिन्नता का प्रश्न नहीं उठना चाहिए।

(iii) सम्पूर्ण पृथ्वी को एक सिद्ध करने के पक्ष में निम्न तर्क दिए जा सकते हैं:-

i) हम सभी एक ही भूमि, अंबर, सूर्य तथा चंद्र की छत्रछाया में रहते हैं। अर्थात् इन सभी को एक ही रहने दिया जाता है। इनको पृथक नहीं कर सकते।

ii) धरती पर रहने वाले सभी पुरुष एक समान हैं तथा एक ही प्रकृति से संबद्ध रहते हैं। इनके स्वरूप विभिन्न हो सकते हैं।

iv) 'एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार'
पृथ्वी पर बसने वाले सारे प्राणी एक समान हैं तथा एक ही प्रकार की प्रकृति से संबंधित हैं। एक ही पुरुष है जिसने भिन्न-भिन्न देशों को विभाजित कर रखा है, उसके रूप अनगिनत है। एक ही पुरुष के अनेकों रूप है।

खण्ड ख

3. निबंध लेखन *

-: वर्षा की एक रात :-

भारतीय ऋतुएँ विभिन्नताओं में एकता को निर्मित करती है। हमारे देश में कुल छः ऋतुओं में ऋतु-चक्र चलता रहता है। वर्षा-ऋतु अत्यंत सुहावनी तथा मनमोहक है। वर्षा की रात तो अत्यंत मनभावन होती है। इसका सुहानापन तो प्रत्यक्ष अनुभूति के माध्यम से मालूम किया जा सकता है। कहा भी गया है :-

रात सुहानी थी वो मोहक बड़ी
रिमझिम-रिमझिम बूँदें और आँधी चल पड़ी।

वर्षा का मौसम पूरा ही अपने आप में एक अत्यंत मोहक अनुभूति है। वर्षा की रात का प्रत्यक्ष अनुभव ऐसी अनुभूति दे जाता है जिसे भुलाए भी नहीं भुला जा सकता। वर्षा ऋतु में मौसम काफी

सुहावना लगता है। न गर्मी की मार होती है न सर्दी की। वर्षा ऋतु में दिन में बादल छाये रहते हैं तथा वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें वर्षा ऋतु का अहसास कराती रहती हैं। शाम होते ही छोटे-छोटे बादल न जाने किस कोने से आकर मँडराने लगते हैं। मंद-मंद हवा चलती है।

"मस्ताना मौसम, रंगीन नज़ारा
प्रकृति झूमे-गाए, वर्षा ही है इक सहारा।"

अँधेरी रात होते ही वर्षा शुरू हो जाती है। रिमझिम बौछारें प्रकृति के साथ अठखेलियाँ करने लगती हैं। ऐसी ही वर्षा ऋतु की स्मृति कुछ इस प्रकार है :-

"वर्षा का था मौसम और अँधेरी रात
दुर्घटनाओं में ऐसे फँसे किस्मत ने छोड़ा साथ।"

वर्षा ऋतु की एक रात हमें किसी कार्यवश एक यात्रा पर जाना पड़ा। मौसम बहुत साफ था, बादल घिर गए थे। यात्रा काफी आनंदपूर्ण थी। वापस घर को आ रहे थे। सफर

बिठाया। वर्षा की रात इतनी भयानक होती है यह हमें अहसास हो गया। कोई विश्वास नहीं कर सकता कि इतने सुहाने मौसम की रात इतनी भयंकर त्रासदी हो सकती है। वर्षा ऋतु ऋतुओं की रानी है लेकिन कभी-कभार असावधानीपूर्वक कुछ-न-कुछ इस पर प्रश्न चिह्न लगा जाता है।

"उस दिन तो सावधानी हटी थी,
तभी तो दुर्घटना घटी थी"

इस प्रकार वर्षा ऋतु की अँधेरी रातें अन्य दुर्घटनाओं को भी जन्म देती हैं। वर्षा ऋतु में जल भराव के कारण कीचड़ की अधिकता हो जाती है। सड़कों पर वाहनांतरण कठिन हो जाता है।

"बौछारें कर रही इससे आनाकानी
कहतीं हमें बना दो फिर से वर्षा रानी।"

करना बहुत अच्छा लग रहा था। वादियों से गुज़रते हुए हमें गुनगुनाने ही लगे थे :-

"सुहाना सफर और ये हसीं वादियाँ..."

खुदा को न जाने यह सुहाना सफर मंजूर नहीं था। हम अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो रहे थे। तभी रात का समय था, धीरे-धीरे वर्षा की बौछारें आ रही थीं। तभी हमारी जीप ने पलटा खाया और हम सड़क के उस पार जा गिरे। अँधेरी अमावस्या की अँधेरी रात में हमें सब-कुछ दिखना बंद हो गया। एकदम से सब-कुछ शांत हो गया। यह रात स्मरण-शक्ति को घर कर गई।

"स्मृति से बस गई है मेरी
वह वर्षा की रात अँधेरी
दुर्घटनाओं ने थी घेरी
ऐसे ही हुई हमें देरी।"

वह रात का काला अँधेरा खा रहा था। किसी तरह टेलीफोन की सहायता से हमने अपने रिश्तेदारों से सामंजस्य

5. पत्र - लेखन

अ ब स
परीक्षा भवन
क ख ग ।

मुख्यमंत्री महोदय
क्ष त्र ज्ञ ।
दिनाँक :- 17 मार्च, 2008 ।

विषय :- परिवहन की समस्या को हल करने हेतु सड़कों की चौड़ाई बढ़ाने बाबत ।

महोदय जी,

उपर्युक्त विषयानुसार सूचित है कि हमारे नगर में भीड़-भाड़ दिन-ब-दिन वृद्धि कर रही है। अनियंत्रित वृद्धि को देखते हुए नगरीय सड़कों की चौड़ाई बहुत कम है। इन सँकरी सड़कों पर वाहनों

0904

का स्थानांतरण एक जटिल समस्या है। परिवहन के साधनों में भी तेज़ी से वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि को लेकर हमारी ये सँकरी सड़कें हर वक्त भीड़-भाड़ युक्त रहती है। ट्रैफिक जाम तो अब आम बात है। हर वाहन चालक पहले जाने की हर संभव कोशिश करता है। इसी मुठभेड़ में कई लोगों को दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है। सड़कों के असमान जाल व वितरण से जनता को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सड़कों को चौड़ा करना एक अनिवार्य विषय बनकर ~~सामने~~ उभरा है।

आपसे सादर अनुरोध है कि आप परिवहन एवं वातायात मंत्री को कड़े निर्देश देकर सड़क निर्माण का कार्य शुरू करवायें। जिससे जनता के कष्टों में कुछ कमी की जा सके।

~~आपका~~ भवदीय

अ ब स।

0904

भेद :- क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(ii) आश्रित उपवाक्य :- जो हमारे देश की निंदा करता है।
भेद :- विशेषण उपवाक्य।

(iii) आश्रित उपवाक्य :- कनाडा में भारतीय लोगों की स्थिति ठीक है।
भेद :- संज्ञा उपवाक्य।

7. (i) (कर्तृवाच्य में)
मैं वहाँ नहीं जाता।

(ii) रामचरितमानस की रचना तुलसी द्वारा की गई थी। (कर्मवाच्य में)

(iii) उससे जोर से नहीं बोला जा सकता। (भाववाच्य में)

खण्ड ग

5. क्रियापद व भेद:-

(i) मोर नाच रहा था।
क्रियापद: नाच रहा था।
भेद:- अकर्मक।

(ii) क्रियापद:- नृत्य सिखा रहा है।
भेद: सकर्मक (द्विकर्मक) क्रिया।

(iii) क्रियापद:- प्रशंसा की।
भेद:- सकर्मक क्रिया।

6. (i)
आश्रित उपवाक्य:- जब वह बोलता है

(ख) अनेकार्थी शब्द :-
गुरु :- शिक्षक, बड़ा।

वा० प्रयोग :- शास्त्रों में गुरु को के पद को सबसे गुरु माना गया है।

खण्ड घ

* -: "अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।" :- *

10·

i] श्रीकृष्ण ने पाँवों में पायल, कमर में करधनी तथा सिर पर मुकुट जैसे आभूषण पहन रखे हैं।

8. अव्यय

(i) माज्ञ

भेद :- क्रियाविशेषण (कालवाचक)।

(ii) और

भेद :- समुच्चयबोधक अव्यय।

(iii) वाह!

भेद :- विस्मयादिबोधक अव्यय।

9. (क) समास

(i) यथाशक्ति :- जितना संभव हो :- अव्ययीभाव समास।

(ii) उत्थान-पतन :- उत्थान और पतन :- द्वंद्व समास।

(ii) श्री कृष्ण की मंद मुसकान की तुलना चंद्रमा की चाँदनी से की गई है।
क्यों :- श्री जिस प्रकार चंद्रमा की चाँदनी चारों ओर अपना प्रकाश फैला रही है उसी प्रकार श्रीकृष्ण की मंद हँसी चारों तरफ शोभायमान हो रही है।

(iii) 'ब्रजदुलह' श्री कृष्ण भगवान है।
जिस प्रकार एक दीपक मंदिर में जलता हुआ अपने प्रकाश से पूरे मंदिर को कांतिमय बना देता है उसी प्रकार श्री कृष्ण भगवान के तेज प्रकाश से यह अखिल संसार शोभायमान हो रहा है। इसीलिए श्रीकृष्ण को जग रूपी दीपक कहा है।

ख] परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रिया हुई व उसके आधार पर दोनों का स्वभाव बिलकुल एक-दूसरे के

(0904)

विपरीत है।

* राम शांत विचारवान है। वे परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए काफी सूझ - बूझ से काम लेते हैं। वे बिना सोचे - समझे, क्रोधित होकर लापरवाही नहीं करते तथा अत्योचित ढंग से सारी बात परशुराम को समझाने का प्रयत्न करते हैं।

* इसके विपरीत लक्ष्मण कुछ अधिक फुर्तीले है। वे राम की भाँति शांत रहने की बजाय परशुराम की बात सुनकर भड़क उठते हैं। वे परशुराम से जवाब - तलब करने लगते हैं। उनके गुस्सैल स्वभाव के कारण परशुराम का पारा और अधिक चढ़ जाता है।

ग) "आग रोटियाँ सेकने के लिए है, जलने के लिए नहीं"

उपर्युक्त पंक्तियाँ समाज में नारी की उपेक्षित दशा को उजागर करती हैं। ससुराल पक्ष के लोग पहले - पहल नव-विवाहिता वधू को प्यार से रखेंगे, उसके रूप की प्रशंसा करेंगे और उसे अपने भ्रम - जाल में फँसा देंगे। जब लड़की

उनकी बातों पर रीझ जाएगी तो वे उससे मनचाहा काम लेंगे। काम नहीं करने पर उसे कड़ी यातनाएँ देंगे, अत्याचार करेंगे। जब लड़की की सहनशक्ति से परे कष्ट आएँगे तो वह किसी भी प्रकार से उनसे छुटकारा पाना चाहेगी। ऐसी स्थिति में वह आग में जलने के लिए भी उतारू हो जाएगी। इस बात को निशाना बनाकर लड़की की माँ उसे समझाती है कि आग तो मात्र रोटियाँ सेकने के लिए है जिससे जीवन चल सके। आग को जलने के लिए कभी प्रयोग मत करना। इस प्रकार कविता के माध्यम से समाज की नारी की दयनीय हालत को दर्शाया गया है।

घ) संगतकार विभिन्न रूपों में मुख्य ~~कलाकार~~ गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं:-

i) जब मुख्य गायक गाते-गाते अनहद पर खो जाता है तो संगतकार ही स्थायी को पकड़े रहता है।

ii) जब गाते-गाते मुख्य गायक थक जाता है तो संगतकार उसका साथ

देने के लिए गाने लगता है।

iii) जब मुख्य गायक का गला बैठने लगता है तो संगतकार उसके साथ अपने सुर यों ही मिला लेता है कि वह अकेला नहीं है तथा पहले गाये गए पद को एक बार फिर से गाया जा सकता है।

12.

i] भाषा :- अवधी।

ii] छंद :- दोहा।

iii] गाल बजाना :- कहि न जनावहिं आपु।

iv] लक्ष्मण एक सच्चा वीर है वह युद्ध भूमि में युद्ध से डरता नहीं है।

v] सच्चे वीर युद्ध भूमि में अपनी वीरता की गाथा नहीं गाते, जबकि कायर

(0904)

2008

लोगों को अपने में समेट लिया है।

iii) उस ज़माने की पड़ोस-व्यवस्था ने लेखिका के लेखन-कर्म को काफी हद तक प्रभावित किया है।

लेखिका के कहानियों के पात्र उस मोहल्ले से संबंधित हैं। अगर पड़ोस-कल्चर के रूप में मोहल्लों तक परिवार का विस्तार न होता तो लेखिका को इतने पात्र मिल पाना मुश्किल ह
यह पड़ोस-व्यवस्था ही है जो इतनी महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

14. (ख) बालगोबिन भगत खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ थे। उनके चरि
की विशेषताएँ :

i) बालगोबिन भगत कभी किसी से झूठ नहीं बोलते थे। यह साधु होने का एक प्रमुख गुण है।

ii) कभी किसी के सामान को बिना पूछे नहीं लेते थे। अगर लेते थ

युद्ध भूमि में अपनी वीर - गाथा गाने लग जाते हैं।

13. i] "उस ज़माने में घर की दीवारें पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं।"
इसका आशय है कि पुराने ज़माने लोग पूरे मोहल्ले को अपना परिवार समझते थे। मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, कुछ परिवार घर एक परिवार में के रूप में रहते थे। उस समय पड़ोस - कल्चर काफी लोकप्रिय था। अब तो ऐसी कोई बात ही नहीं है।

ii] आज के जीवन के निम्न दबावों को लेखिका बड़ी शिद्दत के साथ महसूस करती हैं:-

क) आज अपनी ज़िंदगी खुद जीने का दबाव है। लोग पड़ोस - कल्चर को कोई महत्व नहीं देते।

ख) आज महानगरों में बने फ्लैट ने पड़ोस - कल्चर को विच्छिन्न कर

0904

2008

मुस्लिम होते हुए भी हिंदू संस्कृति में उतनी ही रुचि लेते थे जितनी मुस्लिम में। हिंदू के संस्कृति के प्रतीक बालाजी व विश्वनाथ मंदिर उनके प्रिय थे। वे रोज़ाना सवेरे ड्योढ़ी पर शहनाई बजाते थे। उन्होंने कभी हिंदू-मुस्लिम संस्कृति को अलग नहीं समझा। वे मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

15. (क) i) रामचरितमानस में तो बंदर तक संस्कृत बोलते थे। जब बंदर संस्कृत बोल सकते थे स्त्रियाँ क्यों प्राकृत बोलती थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बताया कि उस समय प्राकृत ही प्रचलित भाषा थी। जबकि स्त्री-शिक्षा के विरोधी लोग मानते हैं कि औरतें अनपढ़ थीं और उन्हें संस्कृत नहीं आती थी इसलिए प्राकृत बोलती थीं

तो इस्तेमाल करके समय पर लौटा देते थे।

(iii) वे सभी से प्रेम से बोलते थे तथा भगवान में पूरी आस्था रखते थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बालगोबिन भगत साधु थे।

ग) 'लखनवी अंदाज़' में लेखक को नवाब साहब के विभिन्न हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने को उत्सुक बिल्कुल नहीं थे।

* जब लेखक रेलगाड़ी में चढ़े तो उन्हें देखते ही नवाब साहब के चेहरे पर चिंता उभर आई। वे एकांत चाहते थे।
* जब लेखक उनके पास बैठे तो उन्होंने मुँह फेर लिया।
* दोनों ही एक-दूसरे को कनखियों से देख रहे थे। किसी ने भी बात शुरू नहीं की।

घ) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे। वे एक

0904

(ii) विभिन्न लोगों के कहने पर ही लोग अपनी कला का प्रचार करते हैं।

अर्थात् जब तक बाह्य दबाव नहीं आता कई लोग अपनी कला का उपयोग नहीं करते। कुछ ही लोग आंतरिक अनुभूति व अपने शौक से अपनी कला का भरपूर प्रयोग करते हैं।

17.

(i) जॉर्ज पंचम की नाक लगाने के लिए मूर्तिकार ने पहले मूर्ति के पत्थर की जाँच की, पत्थर की तलाश में सारे देश का दौरा किया तथा अंत में पत्थर न मिलने पर विभिन्न मूर्तियों के नाक की नाप देखी। अंत में ऐन वक्त पर मामला बिखरा देखकर उसने एक जिंदा नाक लगाने की बात से मसला हल किया। इस प्रकार मूर्तिकार विभिन्न प्रयत्न किए।

(ख) 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' के आधार पर लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने बताया कि फादर कामिल बुल्के हिन्दी से गहरे जुड़े हुए थे। उन्होंने 'ब्लूबर्ड' का 'नीलकंठ' नामक उपन्यास हिन्दी में रूपांतरण किया। वे हिन्दी बोलने के लिए लोगों को प्रेरित करते थे। वे हिन्दी बोलने वालों द्वारा ही हिन्दी की खिल्ली उड़ाने पर बहुत झल्लाते थे। उन्हें हिन्दी से गहरा लगाव था।

16. बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित नहीं करते वरन् अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं।

① लोग पैसे की तंगी के ~~लिए~~ ही कारण ही अपनी कला का प्रयोग करते हैं। जब तक आर्थिक तंगी नहीं होती लोग उसका प्रयोग नहीं करते।

ख) 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है
वह आज की दुनिया से बिलकुल अलग है। आज बच्चे घर
से बाहर नहीं निकलते वे प्लास्टिक व इलैक्ट्रॉनिक्स के बने
खिलौनों से घर पर ही खेलते हैं। जब से निठारी जैसे कांड
होने लगे हैं माँ बाप अपने बच्चों के प्रति काफी सतर्क
हो गए हैं। जबकि पहले बच्चे मोहल्ले के सभी
बच्चों के साथ मिट्टी के खिलौनों से खेलते थे।
खूब मस्ती व आनंद करते थे।

(क) घ) स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी ने अपना मूक सहयोग
दिया। टुन्नू को खादी की धोती व गाँधी टोपी पहने देखकर
वह भी टुन्नू की दी खादी की धोती पहनने लग गई।
विदेशी वस्त्रों की होली के लिए जल ले जाए जाने वाले वस्त्रों
में उसने बिलकुल नई फैंकू सरदार द्वारा दी गई
मैनचेस्टर में बनी साड़िया फैंक दी। उसने सुहाग के

के लिए मान्य प्रस्तुत किया तथा इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में अपना पूर्ण सहयोग दिया।